रह गईं यादें

जहां कभी पायलों की झंकार और कट की आवाजें गूंजती थीं वहां अब खड़ी होंगी गगनचुंबी इमारतें, मुंबई स्थित इस प्रतिष्ठित स्टुडियो को गोदरेज प्रॉपर्टीज ने करीब 50-60 करोड़ में खरीदा

71 साल बाद बिक गया बॉलीवुड के 'शोमैन' का स्टूडियो

मुंबई, प्रेट्र/एंटरटेनमेंट ब्यूरो

- राज कपूर ने 1948 में चेंबूर में की थी आरके स्टूडियो की स्थापना
- 'आग' से शुरू हुआ फिल्मों का सिलसिला 'बरसात' और 'आवारा' से होते हुए 'आ अब लौट चलें' पर थम गया

भारत के मनोरंजन जगत को कई सुपरहिट फिल्में देने वाला प्रतिष्ठित आर के फिल्म एंड स्टूडियो अब इतिहास का हिस्सा बन गया है। मुंबई के चेंबूर इलाके में स्थित इस स्टूडियो को गोदरेज प्रॉपर्टीज ने खरीद लिया है। नई कंपनी यहां गगनचुंबी इमारतें और शॉपिंग कॉम्प्लेक्स का निर्माण कराएगी।

बॉलीवुड के 'शोमैन' राज कपूर ने 1948 में इस स्टूडियो की स्थापना की थी। इस स्टूडियो को राज कपूर ने अपना ही नाम (आरके स्टूडियो) दिया था। हालांकि गोदरेज प्रॉपर्टीज ने सौदे के मूल्य को लेकर कोई जानकारी नहीं दी है, लेकिन माना जा रहा है कि इसकी कीमत 50 से 60 करोड़ रुपये के बीच लगी होगी। यह स्टूडियो 2.2 एकड़ (लगभग 3.5 लाख वर्ग फीट) में फैला हुआ है। जानकारों के मुताबिक इस इलाके में जमीन की मौजूदा कीमत 24,000 से 28,000 रुपये प्रति वर्ग फिट है।

गोदरेज प्रॉपर्टीज लिमिटेड (जीपीएल) के कार्यकारी चेयरमैन पिरोजशा गोदरेज ने कहा, यह प्रतिष्ठित जमीन प्रमुख शहरों के अहम इलाकों में कंपनी की मौजूदगी को मजबूत बनाने में मददगार साबित होगी। उन्होंने कहा कि कंपनी यहां ऐसे फ्लैट्स का निर्माण कराएगी, जिससे यहां रहने वाले लोगों को अद्वितीय जीवनशैली जीने का आनंद मिले। वहीं, राज कपूर के बड़े बेटे और अभिनेता रंधीर कपूर ने कहा, 'चेंबूर में इस संपत्ति का कई दशकों तक मेरे परिवार के लिए बहुत ही भावनात्मक महत्व रहा है, जहां से आरके स्टूडियो संचालित होता रहा। हम इस स्थान के लिए जीपीएल को चुनकर उत्साहित हैं, जो यहां एक नया अध्याय लिखने के साथ ही इसके समृद्ध इतिहास का निर्माण करेगा।'

कपूर खानदान ने क्यों बेचा स्टूडियो : आरके स्टूडियो से कपूर खानदान का भावनात्मक लगाव था। 1988 में राज कपूर के निधन के बाद उनके बड़े बेटे रंधीर कपूर ने इसकी जिम्मेदारी संभाली थी, लेकिन सितंबर, 2017 में लगी आग ने सब कुछ खत्म कर दिया। तब से स्टूडियो बंद पड़ा था। ऋषि कपूर ने नई तकनीक के साथ इसे दोबारा खड़ा करने की बात कही थी। रंधीर कपूर ने उसी समय कहा था कि अब इसे दोबारा पुराने रूप में लाना आर्थिक रूप से फायदेमंद नहीं होगा।

आरके स्टूडियो को बेचने के फैसले पर ऋषि कपूर ने कहा था 'हमने अपने दिलों पर पत्थर रखकर और सोच-समझकर यह फैसला लिया है। हम सभी भाई एक-दूसरे से काफी जुड़े हैं लेकिन हमारे बच्चे और पोते क्या ऐसा कर पाएंगे? हम नहीं चाहते कि हमारे पिता के प्यार की निशानी किसी कोर्ट रूम का ड्रामा बने।' एक बड़ी वजह यह भी है कि ईस्टर्न मुंबई में बना यह स्टूडियो अब फिल्मकारों की पसंद नहीं रहा। ज्यादातर लोग अब अंधेरी और गोरेगांव में शूटिंग करना पसंद करते हैं।

कई यादगार फिल्में दीं : देश की आजादी के एक साल बाद स्थापित इस स्टूडियो ने कई यादगार फिल्में दी है। इसकी पहली फिल्म 'आग' थी। उसके बाद तो आरके के बैनर तले 'बरसात' 'आवारा', 'श्री 420', 'जिस देश में गंगा बहती है', 'मेरा नाम जोकर', 'बॉबी', 'सत्यम शिवम सुंदरम', 'राम तेरी गंगा मैली' 'प्रेम ग्रंथ' जैसी सुपरहिट फिल्में बनी थीं। इस स्टूडियो में बनी आखिरी फिल्म थी 'आ अब लौट चलें।' 'आवारा' और 'श्री 420' ने तो विदेशों में भी सफलता के झंडे गाड़े थे। राज कपूर इन फिल्मों के सहारे अंतरराष्ट्रीय फिल्मकार हो गए थे।

रजा मुराद ने कहा, राजकपूर के लिए स्टूडियो औलाद की तरह था पेज>>7